आविष्कार

नन्हें-मुन्ने हाथों का

विद्यालय पत्रिका

2022-23

श्रीमाती सोना सेठ

उपायुक्त, केंद्रीय विद्यालय संगठन क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई (महाराष्ट्र)

श्रीमान समाज जोगलेकर

सहायक आयुक्त, केंद्रीय विद्यालय संगठन क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई (महाराष्ट्र)

श्रीमान अनिल यादव, ***प्राचार्य***

***श्रीमती ममता रानी*, *उप-प्राचार्या* (प्रथम पाली)**

***श्रीमान एच॰ आर॰ चौधरी*, *उप-प्राचार्य* (द्वितीय पाली)**

श्रीमान प्रकाश वाघमारे, मुख्याध्यापक (द्वितीय पाली)

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन)
संभागीय कार्यालय, आई.आई.टी .कैम्पस, पवई, मुम्बई -400076
KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN
(Under Min. of Education, Govt. of India)
Regional Office: IIT Campus, Powai, Mumbai-400076
दूरभाष/ Tel. (022) 2572 8060/2328/6763/1614/0717 (EAPBX)
ई-मेल/E-mail : **kvsmumbairegion@gmail.com**
WEBSITE : **https://romumbai.kvs.gov.in**

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि केंद्रीय विद्यालय, औरंगाबाद, मुंबई संभाग विद्यालय द्वारा ई-पत्रिका आविष्कार का प्रकाशन किया जा है।

विद्यालय पत्रिका छात्र-छात्राओं के अनुभवों, भावनाओं और कल्पनाओं को एक मंच प्रदान करने का कार्य करती है और साथ ही उनकी ऊर्जा को सही दिशा की ओर उन्मुख करती है। विद्यालय पत्रिका के माध्यम से विद्यालय की वर्ष भर की विभिन्न शैक्षणिक, सांस्कृतिक, आदि गतिविधियों की झलक भी मिलती है।

केंद्रीय विद्यालय, औरंगाबाद, मुंबई छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए सदैव प्रयासरत रहा हैं। विगत एक वर्ष से भी अधिक समय से करोना महामारी की विषम परिस्थितियों के बीच ऑनलाइन एवं यथासंभव ऑफलाइन माध्यम से विभिन्न शैक्षिक एवं शिक्षात्तर गतिविधियों का सफल क्रियान्वयन उनकी लगन एवं समर्पण का द्योतक है। केंद्रीय विद्यालय, औरंगाबाद, मुंबई में क्रियाकलाप आधारित कक्षाओं, कला समेकित अधिगम, बहुविषयक परियोजना कार्यों, आदि शिक्षण युक्तियों के प्रयोग एवं विभिन्न सह-शैक्षिक गतिविधियों द्वारा विद्यार्थियों की रचनात्मकता तथा नेतृत्व क्षमता को निखारने का प्रयास किया जा रहा है।

आशा हैं कि ई पत्रिका के प्रकाशन से हमारे भावी कर्णधारों की कल्पनाओं की उड़ान को नए आयाम मिलेंगे और आपका प्रोत्साहन उनके रचनात्मक विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कड़ी सिद्ध होगा।

इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु विद्यालय के प्रभारी प्राचार्य अनिल यादव संपादक मंडल के सदस्यों, सम्मानित शिक्षकों, एवं प्यारे विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई और अशेष शुभकामनाएं।

सोना सेठ

(सोना सेठ)
उपायुक्त

प्राचार्य की कलम से

अत्यंत हर्ष का विषय है कि विद्यार्थियों के प्रयास, शिक्षकों के मार्गदर्शन एवं अभिभावकों के सहयोगात्मक मार्गदर्शन से प्रेरित होकर विद्यालय ऑनलाइन विद्यालय पत्रिका आविष्कार का प्रकाशन करने जा रहा है |

विद्यालय पत्रिका छात्रों की लेखनी से निकली नूतन रचनाओं का संकलन मात्र नहीं है अपितु विद्यार्थियों की सृजनात्मक रचना तथा साहित्यिक कल्पनाओं के आकलन का आईना है | पत्रिका में अपने मौलिक लेख, रचनाएँ देखकर विद्यार्थी गौरव का अनुभव करते हैं तथा उनमें एक नई प्रेरणा जागृत होती है जो छात्रों में सृजनात्मक चेतना का संचार करती है | विद्यालय पत्रिका वर्षभर में आयोजित शैक्षिक एवं सह-शैक्षिक गतिविधियों के परिचायक है, जिसमें भाग लेकर विद्यार्थी अपनी छिपी हुई प्रतिभा सँवारते हैं | मुझे विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक वांछित उद्देश्यों की प्राप्ति में खरा उतरेगा व विद्यार्थियों में एक नए संकल्प तथा प्रेरणा का संचार करेगा |

पत्रिका को सजाने सँवारने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने वाले सभी विद्यार्थियों एवं संपादक मंडल को धन्यवाद देता हूँ और सभी के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ |

श्रीमान अनिल यादव

प्राचार्य

केंद्रीय विद्यालय, औरंगाबाद

शुभ कामना संदेश

उड़ान तो भरना है,
चाहे कई बार गिरना पड़े।
सपनों को पूरा करना है,
चाहे खुद से भी लड़ना पड़े।

संसार का कोई भी कार्य चाहे वह कितना भी कठिन या दुर्लभ क्यों न हो मनुष्य अपने अथक प्रयासों से उस कार्य को पूर्ण करने में सफल होता है । कोविड महामारी के भय और अनिश्चितता के काल से निकलकर आशा के नए सवेरे में आप सभी का स्वागत है । यह पत्रिका आविष्कार सृजनात्मक क्षमता, सुंदर कल्पना और नवीन विचारों का दर्पण है । इस ई-पत्रिका आविष्कार का उद्देश्य विद्यार्थियों के अंदर छिपी प्रतिभा को पहचानना, निखारना और सही मार्गदर्शन कर रचनात्मक रूप देना है । मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपको विद्यालय की ई-पत्रिका का यह संस्करण अवश्य पसंद आएगा । मैं प्राचार्य महोदय, सभी शिक्षक-गणों और विद्यार्थियों को उनके बहुमूल्य योगदान के लिए आभार व्यक्त करती हूँ ।

जब पूरी दुनिया कहती है कि हार मान लो,
तब उम्मीद आप से कहती है कि एक बार और प्रयास करो ।

श्रीमती ममता रानी
उप-प्राचार्या,
केंद्रीय विद्यालय औरंगाबाद छावनी, प्रथम पाली

एच आर चौधरी

उप प्राचार्य

पाली द्वितीय

शुभ कामना संदेश

प्रिय विधार्थियों एवं अभिभावकों,

अति हर्ष का विषय है कि केन्द्रीय विद्यालय औरंगाबाद ई-विद्यालय पत्रिका प्रकाशित करने जा रहा है । इस पुस्तिका के माध्यम से इस उपवन रूपी शाला के ज्ञान पिपासु उपासकों को अपनी स्व-रचित रचनाओं, आलेखों एवं मौलिक कृतियों को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने का सुअवसर मिलेगा । विद्यालय पत्रिका किसी भी शैक्षिक संस्था में सम्पादित होने वाली शैक्षणिक एवं सह शैक्षणिक गतिविधियों का आईना होती है, जो छात्र-छात्राओं के बहुमुखी विकास व संवर्धन हेतु आवश्यक है ।

विद्यालय के समर्पित शिक्षकों ने जिम्मेदार व जागरूक अभिभावकों के सहयोग से नन्हें-मुन्हे, होनहार व भारत-वर्ष के भावी कर्णधारों के चहुँमुखी विकास हेतु सार्थक प्रयास करते हुए पठन-पाठन की सभी क्रियाओं को अविरल संचालित किया है, जिसकी एक झलक आपको इस अंक के द्वारा प्राप्त होगी ।

मैं इस पत्रिका के प्रकाशन के शुभ अवसर पर सम्पादक मण्डल के सदस्यों, संस्था के हितधारकों को साधुवाद तथा केन्द्रीय विद्यालय संगठन के उच्च अधिकारियों, क्षेत्रीय उपायुक्त महोदय, सहायक आयुक्त महोदय व प्राचार्य महोदय को अनवरत सहयोग एवं आशीर्वाद के लिए शुक्रिया अदा करता हूँ ।

संपादक मंडल

मुख्य संरक्षक

श्रीमाती सोना सेठ

उपायुक्त, केंद्रीय विद्यालय संगठन क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई (महाराष्ट्र)

संरक्षक

श्रीमान समाज जोगलेकर

सहायक आयुक्त, केंद्रीय विद्यालय संगठन क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई (महाराष्ट्र)

सह संरक्षक

श्रीमान अनिल यादव, प्राचार्य

श्रीमती ममता रानी, उप-प्राचार्या, प्रथम पाली

श्रीमान एच॰ आर॰ चौधरी, उप प्राचार्य, द्वितीय पाली

मुख्य संपादक

श्रीमान संजय शिंदे

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक हिन्दी

संपादक

हिन्दी विभाग - श्रीमान डी॰ बी॰ देवकत्ते प्र॰ स्ना॰ शि॰ हिंदी

संस्कृत विभाग - श्रीमान विकास कुमार प्र॰ स्ना॰ शि॰ संस्कृत

अँग्रेजी विभाग - श्रीमान के॰ एम॰ भानेगावकर प्र॰ स्ना॰ शि॰ अंग्रेजी

संपादक की कलम से

प्रिय पाठक गण,

इधर मैं लिखता गया, उधर पाठक पढ़ता गया।
मेरी कल्पनाओं में घुल कर, अपने विचार गढ़ता गया।

रचनाएँ लेखक के व्यक्तित्व का आईना होती है जिसमें उसका पूर्ण व्यक्तित्व झलकता है और उभरकर आता है | खासतौर से सुकुमार बच्चों द्वारा लिखित, रचित, संकलित, कविता, लेख व कोई भी अन्य सामग्री उनके अंदर निहित सृजन क्षमता को दर्शाता है, जिनका स्पष्ट प्रमाण आपके समक्ष यह विद्यालय पत्रिका "आविष्कार" है | मेरी कामना है कि हमारे विद्यार्थी मानवीय मूल्यों के प्रति आस्थावान एवं साहित्य प्रेमी बने, जिससे उनके अंतर्मन में लोकमंगल की विराट चेतना समाहित हो सके | मेरा विश्वास है कि यह पत्रिका विद्यालय की वर्षभर की शैक्षिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं खेलकूद संबंधी सभी कार्यों की बहुमुखी प्रगति का चित्र प्रस्तुत करने के साथ-साथ निश्चित रूप से सभी के ज्ञान के दायरे को विस्तृत करेगा | बच्चों द्वारा रचित और संकलित होने के कारण त्रुटियां स्वाभाविक है, जिन्हें बच्चों के प्रोत्साहन हेतु सहजता से नज़र अंदाज किया जा सकता है |

प्राचार्य एवं उप-प्राचार्य जी के कुशल मार्गदर्शन एवं संपादक मंडल के सहयोग से यह पत्रिका आपके समक्ष प्रस्तुत है |

संजय शिंदे
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)

विद्यालय के सम्माननीय गुरुजन

प्रथम पाली

क्र संख्या	नाम	पदनाम
1.	श्रीमान अनिल यादव	प्राचार्य
2.	श्रीमती ममता रानी	उप-प्राचार्या
3.	श्री. एस. जी. कांबले	स्नातकोत्तर शिक्षक (अंग्रेजी)
4.	श्रीमती अर्पिता दास	स्नातकोत्तर शिक्षक (संगणक)
5.	श्री. सुनील जाधव	स्नातकोत्तर शिक्षक (भौतिकशास्त्र)
6.	श्रीमती शाहीन तबस्सुम	स्नातकोत्तर शिक्षक (जीवशास्त्र)
7.	श्रीमती शिवानी गुरुंग	स्नातकोत्तर शिक्षक (वाणिज्य)
8.	श्रीमती सुशीला राणी एम.	प्र. स्ना. शि. (विज्ञान)
9.	श्रीमती सरोजा अगाशे	प्र. स्ना. शि. (गणित)
10.	श्री एस. एम. श्रीवास्तव	प्र. स्ना. शि. (गणित)
11.	श्री के एम भानेगावकर	प्र. स्ना. शि. (अंग्रेजी)
12.	श्री डी.बी. देवकते	प्र. स्ना. शि. (हिंदी)
13.	श्री.सुरेश बनकर	प्र. स्ना. शि. (शारीरिक शिक्षक)
14.	श्री. मंगेश वानकर	प्र. स्ना. शि. (कार्यानुभव शिक्षक)
15.	श्री. एम. एम. अहमद	पुस्तकालयाध्यक्ष
16.	श्री. रुशिंदर दाभाडे	प्र. स्ना. शि. (अंग्रेजी)
17.	श्री. गजानन वैद्य	प्र. स्ना. शि. (अंग्रेजी)
18.	श्री. संघरक्षित सूर्यवंशी	प्र. स्ना. शि. (सा.विज्ञान)
19.	सु श्री रीतु कुमारी यादव	प्र. स्ना. शि. (विज्ञान)
20.	श्री. विकास	प्र. स्ना. शि. (संस्कृत)
21.	श्री संजय शिंदे	प्र. स्ना. शि. (हिंदी)
22.	श्री. अनिल ज शिरसाट	प्र. स्ना. शि. (अंग्रेजी)
23.	श्री. प्रकाश बी शिरसाट	प्रा. शि.
24.	श्री. विजय गोटारकर	प्रा. शि.

क्र संख्या	नाम (प्रथम पाली)	पदनाम
25	श्री. बालाजी निखाते	प्रा. शि.
26	श्री. कारभारी सपकाल	प्रा. शि. (संगीत)
27	श्री. संघपाल कांबले	प्रा. शि.
28	श्री. चंद्रमोहन एम.	प्रा. शि.
29	श्री. एन. वी. मोकाशी	प्रा. शि.
30	श्रीमती शीतल निखाते	प्रा. शि.
31	श्री. गजानन कांबले	प्रा. शि.
32	श्री.किरण बुधवत	प्रा. शि.
33	श्रीमती छाया सालवे	प्रा. शि.
34	श्रीमती दीपाली बिडवे	प्रा. शि.
35	श्रीमती वैशाली तिलवाने	प्रा. शि.
36	श्री. संजय अधाने	प्रा. शि.
37	श्री. गणेश शिलावंत	प्रा. शि.
38	श्री उद्धव खिल्लारे	प्रा. शि.
39	श्री जाखड़े गणेश सुरेश	प्रा. शि.
40	श्री. गायकवाड़ अमोल	प्रा. शि.
41	श्री. एस. बी. जाधव	सब स्टाफ
42	श्री. ए. टी. सुस्ते	सब स्टाफ

द्वितीय पाली

क्र संख्या	नाम (द्वितीय पाली)	पदनाम
1	श्री. एच. आर. चौधरी	उप-प्राचार्य
2	श्री. प्रकाश वाघमारे	मुख्याध्यापक
3	श्री. नागोराव तारु	प्र. स्ना. शि. (अंग्रेजी)
4	श्री दीपक सरकटे	प्र. स्ना. शि. (अंग्रेजी)
5	श्री प्रितम	प्र. स्ना. शि. (गणित)
6	सुश्री सौम्या नीरज	प्र. स्ना. शि. (विज्ञान)
7	श्री राजराम बैरवा	प्र. स्ना. शि. (सा.विज्ञान)
8	श्रीमति सोनम वर्मा	प्र. स्ना. शि. (सा.विज्ञान)
9	श्री गजानन खंदारे	प्र. स्ना. शि. (जीव विज्ञान)
10	श्रीमती रेखा कुमावत	प्र. स्ना. शि. (कला)
11	श्री गौतम अवसरमोल	प्रा. शि.
12	श्री दत्तात्रेय पवार	प्रा. शि.
13	श्री निवृत्ती सोलंकी	प्रा. शि.
14	श्री रविंद्रनाथ फुल्लारे	प्रा. शि.
15	श्री कृष्णा मोरे	प्रा. शि.
16	सुश्री चारिका कोलते	प्रा. शि.
17	श्रीमती रूपिका सिंह	प्रा. शि. (संगीत)
18	श्री सागर महेर	प्रा. शि.
19	श्री किरण कुमार कोल्हे	प्रा. शि.
20	श्री प्रकाश जाधव	प्रा. शि.
21	श्री ऋषिकेश यदमाल	प्रा. शि.
22	श्रीमती संघमित्रा निसर्गन	प्रा. शि.
23	श्री विकास नगरे	प्रा. शि.
24	श्री गजानन कलासरे	प्रा. शि.
25	श्रीमती सपना शरनार्थ	प्रा. शि.
26	श्री संतोष गव्हले	प्रा. शि.
27	श्री सचिन शिवाजी नागरे	प्रा. शि.
28	श्री कृष्णा काकड़े	प्रा. शि.

विद्यालय के चमकते सितारे

प्रथम पाली

कक्षा बारहवीं-विज्ञान में शीर्ष स्थान प्राप्त करने वाले छात्र

कु. वैभव वालुजकर
91.40

कु. अनिकेत जाधव
86

कु. आनंदसागर गायकवाड
83.40

कक्षा बारहवीं- वाणिज्य में शीर्ष स्थान प्राप्त करने वाले छात्र

कु. आंकना वत्स
93.60

कु. यशवंत
92.80

कु. सेजल नवाते
90.80

प्रथम पाली

कक्षा दसवीं में शीर्ष स्थान प्राप्त करने वाले छात्र

कु॰ आदित्य भालेराव
96.40

कु॰ यशी यादव
95.80

कु॰ मोहिनी जगताप
95.20

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	शीर्षक हिन्दी	पृष्ठ संख्या
1	पर्यावरण	17
2	पिता का स्नेह	18
3	मस्ती की पाठशाला	19
4	बचपन	20
5	व्हाट्स एप कविता	21
6	साइंस के टीचर	22
7	चुटकुले	23
8	हिंदी दिवस	24
9	कल का उजाला	26
10	वास्तविकता का दर्पण	28
11	आप ही हो मेरे नायक	30

अ.क्र.	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
	संस्कृत	
12	चतुरः काकः	33
13	एषा मम धन्या माता	34
14	संस्कृत सूक्तियाँ	35
15	“धर्मे धमनं पापे पुण्यम्”	36
16	संस्कृत विद्वान - कौटिल्य:	38
17	वृक्षः	40
18	नीति सूक्ति	41
19	महर्षि वाल्मीकि	42
20	वीर	44
21	शिक्षकः	46
22	संस्कृत श्लोक	48
23	संस्कृत श्लोक	49
	अंग्रेजी	
24	Riddles	51
25	Come	53
26	Joke	54

हिन्दी विभाग

पर्यावरण

इंसान की सारी माया,
पर्यावरण पर संकट लाया
देश को विकसित बनाया,
पर्यावरण पर संकट लाया
पेड पदे नष्ट हो गए,
पेड काट इंसान मस्त हो गये
अपने स्वार्थ को दिया बढावा,
पर्यावरण को खूप सताया
पंछी सारे लुप्त हो गये,
इंसान सारे स्वस्त हो गये
इमारते तो बहुत बनाया,
पर्यावरण को इतना सताया
प्रदूषण को इतना बढाया,
पर्यावरण प्रदूषण की चपेट मे आया
इंसानो को फिर भी समझ ना आया,
पर्यावरण को खूब सताया
पर्यावरण की दुहाई,
सुनलो पेड काटने वाले कसाई
पेड लगाओ, देश बचाओ,
पर्यावरण को स्वच्छ बनाओ

किरण कारभारी आटुले
कक्षा-नववी-'ब'

पिता का स्नेह

प्यार का सागर ले आते
फिर चाहे कुछ न कह पाते
बस बिन बोले ही समझ जाते.
दुःख के हर कोने में,
खड़ा उनको पहले से पाया,
छोटी उंगली पकड़कर चलना उन्होंने ही तो सिखाया.
जीवन के हर पहलु को अपने अनुभव से बताया
हर उल्जन को हमारी उन्होंने ही तो सुलझाया
कभी कंधे पे बिठाकर मेला दिखते हैं पिता
कभी बन के घोडा घूमते हैं पिता
माँ अगर पैरों पर चलना सीखती है
तो पैरों पर खड़ा होना सिखाते हैं पिता
कभी हंसी और ख़ुशी का मेला है पिता
कभी कितना तनहा और अकेला है पिता
माँ तो कर देती है अपने दिल की बात
सब कुछ समेट के आसमान सा फैला है पिता
माँ अगर है मासूम सी लोरी
तो कभी न भूलना वह कहानी है पिता.

वैष्णवी मोरे
कक्षा- दसवीं क

मस्ती की पाठशाला

स्कूल ने हमारे हैं जिंदगी बनाई,
तभी तो वह मस्ती की पाठशाला कहलाई.
हमने यह बचपन यही है बिटिया सारा,
हमने हर लम्हा, यही गुजरा हमारा.
दन्त के या मार के हमें है सुधारा,
इन्हीं के सहारे तो यह जीवन है सवारा.
याद रहेगा रहेगा हर लम्हा मुझे सारा जीवन,
इस पाठशाला का क्यूंकि यह है मेरा संगम.
बचपन, मस्ती और कहीं तरीकों से,
अध्यापिका को है सताया,
फिर भी उन्होंने तो हमारा,
आत्मविश्वास है बढ़ाया
हर पल दिया है प्रेम और सहारा
इन्होंने ही ज्ञान का दीपक है जलाया.

बचपन

एक बचपन का जमाना था,
जिससे खुशियों का खजाना था
चाहत चाँद को पानी की थी पर दिल तितली पर दीवाना था...
खबर न थी कुछ सुबह की न शाम का ठिकाना था...
थक कर आना स्कूल से,
पर खेलने भी जाना था...
माँ की कहानी थी,
परियों का फ़साना था...
बारिश में कागज की नाव थी हर मौसम सुहाना था...

क्रिश राठी
कक्षा - ग्यारहवीं
वाणिज्य

व्हाट्स एप कविता

हे व्हाट्सअप ॲप देता तुझे पूजे सारा जमाना,
ऐसा क्या चमत्कार तेरा, जरा हमे भी तो बताना,
बच्चे - बूढे, नौजवान बस तेरे ही गुलाम,
दिन-रात व्हाट्सअप ॲप है क्या सबको एक ही काम।
एक जमाना था, किसी के खत के इंतजार में दिन निकल जाते थे,
औरत सुबह से लेकर शाम तक व्हाट्सअप के जोक्स ही लुभाते।
बच्चो को ग्रह कार्य की चिंता नही उन्हे डीपी और स्टेटस ने बहकाया।
कभी लास्ट सीन फसाया, तो कभी धीरे से चलते इंटरनेटने तडपाया।
बेशक दुरिया मिठाई व्हाट्सअप ने दुरिया बढाई है,
इसी ॲप के कारण एक ही कमरे में बैठकर सभी अंजान हो जाते है,
अपने ही माता- पिता बच्चो के लिए मेहमान हो जाते है,
आओ इस व्हाट्सअप इंटरनेट कुछ हो कर अपनों से बाते करे।
कुछ उनकी सुनें,कुछ अपनी कसें, चलो एक नई सुरुवात करें।

अंजली स्तवन
कक्षा-10 क

साइंस के टीचर

ये है हमारे साइंस के टीचर,

जीन मे है कई मेन फीचर।

ताकत उनकी इतनी सुपर,

चाहे तो उठा दे स्कूटर।

पडणा है उनका एक गुण,

न है उनमें कोई अवगुण।

साइंस में है हमारी लीडर,

प्रॉब्लेम सॉल्व करे जैसे कम्प्युटर।

हम ना करे कभी उनकी निंदा,

देखने मे एकदम हैं गोविंदा,

ये हमारे साइंस के टीचर।

ध्रुव दराडे
कक्षा-नवी क

चुटकुले

अध्यापक: ताजमहल किसने बनाया?

राम: जी कारीगर ने!

अध्यापक: मेरा मतलब बनाया किसने था?

राम: जी ठेकेदार ने..!!

अध्यापक: A, B, C सुनाओ...

पप्पू: A, B, C

टीचर: और सुनाओ...

पप्पू: और सब बढ़िया, आप सुनाओ!

मंदिर में

रवि: हे भगवन मेरी सरकारी नौकरी लगवा दे!!

भगवन: क्यों खाली हाथ आये. नारियल, केला और सेव नहीं लाए?

रवि: भगवन जी आप कर्म करो फल की चिंता मत करो!!!

डॉक्टर: आप की कोई अंतिम इच्छा है?

कोरोना मरीज: जिन लोगों ने मुझे जीवन में परेशां किया है उन लोगों को गले लगा कर माफ़ करना है..!!

हिंदी दिवस

हर साल 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि इस दिन भारत की संविधान सभा ने देवनागरी लिपि में लिखी गई हिंदू भाषा को भारत गणराज्य की अधिकारिक भाषा घोषित किया था। भारत की संविधान सभा ने 14 सितंबर 1940 को भारत गणराज्य की आधिकारिक भाषा के रूप में हिंदी को अपनाया। हालांकि इसे 26 जनवरी 1950 को देश के संविधान द्वारा अधिकारिक भाषा के रूप में इस्तेमाल करने के विचार को मंजूरी दी गई। हिंदी को अधिकारिक भाषा के रूप में इस्तेमाल करने के दिन को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

हिंदी दिवस का महत्व

हिंदी दिवस को उस दिन के याद करने के लिए मनाया जाता है जिस दिन हिंदी हमारे देश की अधिकारिक भाषा बन गई। यह हर साल हिंदी के महत्व पर जोर देने और हर पीढ़ी के बीच इस को बढ़ावा देने के लिए मनाया जाता है जो अंग्रेजी से प्रभावित है। यह युवाओं को अपनी जड़ों के बारे में याद दिलाने का एक तरीका है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम कहां तक पहुंचे हैं और हम क्या करते हैं अगर हम अपनी जड़ों के साथ मैदान में डटे रहे और समन्वय रहे तो हम अपनी पकड़ मजबूत बना लेंगे।
यह दिवस हर साल हमें हमारी असली पहचान की याद दिलाता है और देश के लोगों एग्जिट करता है। जहाँ भी हम जाएँ हमारी भाषा

कोमा संस्कृति और मूल्यों हमारे साथ बरकरार रहने चाहिए और यह एक अनुस्मारक के रूप में कार्य करता है। हिंदी दिवस एक ऐसा दिन है जो हमें देश भक्ति भावना के लिए प्रेरित करता है।

कोमल बबन खरात
कक्षा-11 वीं विज्ञान

कल का उजाला

चारों तरफ उजाला कोमा पर अंधेरी रात थी।
जब वह हुआ शहीद, उन दिनों की बात थी।
आंगन में बैठा बेटा, मां से पूछे बार-बार,
दीपावली में क्यों ना आए पापा अबकी बार।

- जो बेटा यह नहीं जानता कि उसके पिता वापस लौट कर कभी नहीं आएंगे।वह अपनी मां की स्थिति को देखकर अपनी मां से कहता है।

मां क्यों ना तूने, आज भी बिंदिया लगाई है,
है दोनों हाथ खाली, ना मेहंदी रचाई है।
बिछुआ भी नहीं पाओगे, बिखरे से बाल है,
लगती थी कितनी प्यारी कामा यह कैसा हाल है।
कुमकुम के बिना सूना सा लगता है श्रृंगार,
दीपावली में क्यों ना आए पापा अबकी बार।

- जो बेटा यह नहीं जानता कि उसके पिता वापस लौट कर कभी नहीं आएंगे। वह थोड़ी देर के लिए बाहर खेलने जाता है। अपने मित्रों के पिता और द्वारा लाए हुए उपहारों को देखता है,उन्हें देखकर पुनः अपनी मां की गोद में वापस आता है 9और अपनी मां से कहता है।

किसी के पापा, उसे नए कपड़े लाए हैं,
मिठाइया और साथ में पटाखे लाए हैं।
वह भी तो नए शूज पहने खेलने आया।
पापा-पापा कहकर सब ने मुझ को चिढ़ाया।
अब तो बता दो क्यों है सुना, आंगन घर द्वार

दीपावली में क्यों ना आए पापा अबकी बार।

- बेटे को कोई उत्तर नहीं मिलता वह अपनी मां से रूठ जाता है। अपनी मां को दोनों हाथ पकड़ता है उनका ध्यान अपनी और आकर्षित करता है। और कहता है।

दो दिन हुए हैं तूने कहानी ना सुनाई।
हर बार की तरह ना तूने खीर बनाई।
आने दो पापा से मैं सारी बात कहूंगा,
तुमसे ना बोलूंगा, ना तुम्हारी मैं सुन लूंगा।
ऐसा क्या हुआ कि बताने से इनकार ,
दीपावली में क्यों ना आए पापा अबकी बार।

- और विडंबना देखिए कमा की पूछ रहा था बेटा जिस पिता के लिए कमा जुड़ने लगी थी लकड़ी या उसके चिता के लिए। पूछते पूछते वह हो गया निराश, जिस वक्त आंगन में आई उसके पिता की लाश। बेटा एक तक उस लाश को देखता है, एक टक अपनी मां को देखता है और पुणे अपनी मां को देखता है और अपनी मां से कहता है।

मत हो उदास मां,मुझे जवाब मिल गया,
मकसद मिला जीने का ख्वाब मिल गया,
पापा का जो काम रह गया है अधूरा,
लड़कर देश के लिए करूंगा मैं पूरा,
आशीर्वाद दो मां काम पूरा हो इस बार,
दीपावली में क्यों ना आए पापा अबकी बार।

किरण करभारी कटुले
कक्षा-9 वीं ब

वास्तविकता का दर्पण...

रजक समाज की,कई गजब है कहानियां
कही है मासूमियत कोमा तो कहीं भरी शैतानियत
कभी माता-पिता किया करते थे, बच्चों की शैतानियां पर
आज बच्चे बरस पड़ता है, उनकी परेशानियों पर
कई खत की आस में, कोई मां बैठी है डाक घर के द्वार
तू कहीं बून भड़ास में, एक बालक बैठा है अनाथ आश्रम के द्वार
पुलिस और अदालत अब,चोरों को न्याय देने लगी है।
आज गरीबों और मजदूरों की किस्मत कमा उन पर पलटवार करने लगी है।
वीरान पड़ी बस्तियां आज, हे ईश्वर तुझे पुकार रही है
नहीं होती अब यहां कन्या पूजन, हो रहा है बस शकलो का आकलन।
भ्रष्ट है आज शहरों में, हर गली और मोहल्ला
करता कोई कुछ नहीं, बस होता रहता है हल्ला
आज सड़क पर पड़े शराबी को, घर तो कोई पहुंचाता नहीं
पर जनाब शराब मुक्त रैलियों हर कोई है निकालता
अरमानों के साथ आज वह दुल्हन, पर अगर में फिर जली।
पर आज भी ससुराल में उसके, नहीं है दहेज की कमी
जो कमाई एक पिता ने, अपने जीवन भर की पूंजी
इन दहेज के भूखों ने कामा लगा दी उसमें भी अपनी कुंजी
सोचा कभी निकलूं ढूंढने, आजाद के अरमान और गांधी का संसार
मिला तो कुछ भी नहीं कमा पर समाज ने किया तिरस्कार

हे ईश्वर!

आज भी याद है संसार में, तेरे दो रूपों के नाम का

क्या यही था तेरा उद्देश्य कामा इस दुनिया को बनाने का

बना लिया है हिंदुओं ने मंदिर और मुसलमानों ने दरगाह

अफसोस है कि गीता और कुरान के, शब्द को किसी ने नहीं परखा।

वैष्णवी मोरे

कक्षा-10 वीं क

आप ही हो मेरे नायक

आप ही हो मेरे नायक
आप ही ने सिखाया प्यार क्या असली अर्थ
जो बिना दर्शाए कोमा बिना समझाए हो जाता है महसूस,
इसके लिए मैं करती आपसे दिल से प्यार,
मेरे प्यारे पापा।
आपने मुझ पर कुर्बान किया आपकी
जिंदगी का वह हर पल,
जिससे आप अपनी दुनिया जन्नत बना सकते थे।
मुझे दर्द होता है कमा तो मैं आपके पास चली आती हूं,
लेकिन आपको जब दर्द होता है,
आप कभी नहीं आते हो मेरे पास,
बस यह सोच कर कि आपके दर से होगा मुझे दुख।
बस इस बात की शिकायत है पापा,
कि आप अपने सभी सुख तो बांटते हो,
लेकिन दुख बांटने के लिए, कभी मुझे याद नहीं करते।
फिर भी क्या करूं पापा कामा दांत भी तो नहीं सकती आपको,
लेकिन मेरा दिल जानता है,
मैंने आपको अपनी जिंदगी का असली नायक माना है।
हमेशा कहती थी कि आप मुझे प्यार नहीं करते,
लेकिन मेरा दिल जानता है,
कि आप जैसा, मुझे कोई प्यार भी नहीं कर सकता।

सभी कहते हैं, मैं आप जैसे ही हूं,
लेकिन इस बात को मैं कभी नहीं मानती,
क्योंकि आप जैसा अपना दुख नहीं छुपा सकती मैं।
इसलिए तो कहती हूं,
मेरे प्यारे पापा
आप ही हो मेरे नायक।

अंजली रामधन सतवन
कक्षा-10 वीं क

संस्कृत
विभाग

चतुरः काकः

एक: काक: अस्ति।

स: बहु तृषितः।

सः जलार्थं भ्रमति।

तदा ग्रीष्मकालः।

कुत्रापि जलं नास्ति।

काकः कष्टेन बहुदूरं गच्छति।

तत्र सः एकं घटं पश्यति।

काकस्य अतीव सन्तोषः भवति।

किन्तु घटे स्वल्पम् एव जलम् अस्ति।

'जलं कथं पिबामि ?'

इति काकः चिन्तयति।

सः एकम् उपायं करोति।

शिलाखण्डान् आनयति।

घटे पूरयति।

जलम् उपरि आगच्छति।

काकः सन्तोषेण जलं पिबति। ततः गच्छति।

तनुजा प्रेमानंद कर्णे

कक्षा :- ९ 'ड'

एषा मम धन्या माता

एषा मम धन्या माता ।
एषा मम धन्या माता।। ध्रुवपदम्।
या मां प्रातः शय्यातः
जागरयति सम्बोधनतः।
हरस्मिरणं या कारयति।
आलस्यं मम नाश्यति।। एषा मम...।

कुरु दत्तं ग्रहकार्यम् त्वम्,
कुरु सुत! पाठभ्यासं त्वम्।
आदेश ददती एवम्
योजयते कार्ये नित्यम्।। एषा मम...।

मधुरं दुग्धं ददाति या
स्वादु फलं च ददाति या।
यच्छति महां मिष्टान्नम्
यच्दति महां लवणत्राम्।। एषा मम...।

कार्य सम्यक् न करोमि यदा,
अपरांध विदधामि यदा।
कलहंकुर्वन् रोदिमि यदा
तदा भ्रंश मां तर्जयति या।। एषा मम...।

श्रेया जाधव
कक्षा :- नवमी 'ड '

संस्कृत सूक्तियाँ

1. *अतिथि देवो भव।*

अर्थ:- अतिथि हमारे लिए भगवान के स्वरूप होते है।

2.*वसुधैव कुटुम्बकम।*

अर्थ:- पृथ्वी के सभी वासी एक परिवार है।

3.*अहिंसा परमो धर्मः।*

अर्थ:- अहिंसा ही सबसे बड़ा (परम) धर्म होता है।

4.*गरीयषी गुरोः आज्ञा।*

अर्थ:- गुरुजनों की आज्ञा महान होती है।

5. *लोभः पापस्य कारणम्।*

अर्थ:- लोभ ही पाप का कारण होता है।

तनुजा प्रेमानंद कर्णे

कक्षा:- ९ 'ड'

“धर्मे धमनं पापे पुण्यम्”

कथा परिचयः

“धर्मे धमनं पापे पुण्यम्” इति कथा मध्यप्रदेशस्य डिण्डोरी - जनपदस्य परधानसमुदायस्य मध्ये प्रचलिता काचित् लोककथा वर्तते | इयं कथा पञ्चतन्त्रशैल्या विरचिता अस्ति | अस्यां कथायां स्पष्टीकृतं वर्तते यत् सङ्कटे आगते सति कथं चातुर्येण तस्य परिहार: कर्तुं शक्यते एवञ्च य: यथा व्यवहारं करोति तेन सह तथैव व्यवहार: करणीय: ।

कथा वाचन

आसीत् कश्चित् चञ्चलो नाम व्याधः। पक्षिमृगादीनां ग्रहणेन सः स्वीयां जीविकां निर्वाहयति स्म। एकदा सः वने जालं विस्तीर्य गृहम् आगतवान् । अन्यस्मिन् दिवसे प्रातःकाले यदा चञ्चल: वनं गतवान् तदा सः दृष्टवान् यत् तेन विस्तारिते जाले दौर्भाग्याद् एकः व्याघ्रः बद्धः आसीत् । सोऽचिन्तयत्, ‘व्याघ्रः मां खादिष्यति अत एव पलायनं करणीयम् ।’ व्याघ्रः न्यवेदयत् - ‘भो मानव! कल्याणं भवतु ते । यदि त्वं मां मोचयिष्यसि तर्हि अहं त्वां न हनिष्यामि ।' तदा स: व्याध: व्याघ्रं जालात् बहि: निरसारयत् । व्याघ्र: क्लान्त: आसीत् । सोऽवदत् , 'भो मानव! पिपासु: अहम् । नद्या: जलमानीय मम पिपासां शमय । व्याघ्र: जलं पीत्वा पुन: व्याधमवदत् , 'शान्ता मे पिपासा । साम्प्रतं बुभुक्षितोऽस्मि । इदानीम् अहं त्वां खादिष्यामि ।' चञ्चल: उक्तवान् , अहं त्वत्कृते धर्मम् आचरितवान् । त्वया मिथ्या भणितम् । त्वं मां खादितुम् इच्छसि?

व्याघ्र: अवदत् , अरे मूर्ख! धर्मे धमनं पापे पुण्यं भवति एव । पृच्छ कमपि ।' चञ्चल: नदीजलम् अपृच्छत् । नदीजलम् अवदत् , 'एवमेव भवति, जना: मयि स्नानं कुर्वन्ति, वस्त्राणि प्रक्षालयन्ति तथा च मल-मूत्रादिकं विसृज्य निवर्तन्ते, अत: धर्मे धमनं पापे पुण्यं भवति एव ।' चञ्चल: वृक्षम् उपगम्य अपृच्छत् । वृक्ष: अवदत् , 'मानवा: अस्माकं छायायां विरमन्ति । अस्माकं फलानि खादन्ति, पुन: कुठारै: प्रहृत्य अस्मभ्यं सर्वदा कष्टं ददति। यत्र कुत्रापि छेदनं कुर्वन्ति । धर्मे धमनं पापे पुण्यं भवति एव ।' समीपे एका लोमशिका बदरी-गुल्मानां पृष्ठे निलीना एतां वार्तां शृणोति स्म । सा सहसा चञ्चलमुपसृत्य कथयति- "का वार्ता? माम् अपि विज्ञापय ।" स: अवदत् - " अहह मातृस्वस: ! अवसरे त्वं समागतवती । मया अस्य व्याघ्रस्य प्राणा: रक्षिता:, परम् एष: मामेव खादितुम् इच्छति ।" तदनन्तरं स: लोमशिकायै निखिलां कथां न्यवेदयत् । लोमशिका चञ्चलम् अकथयत् - बाढम् , त्वं जालं प्रसारय । पुन: सा व्याघ्रम् अवदत् - केन प्रकारेण त्वम् एतस्मिन् जाले बद्ध: इति अहं प्रत्यक्षं द्रष्टुमिच्छामि । व्याघ्रः तद् वृत्तान्तं प्रदर्शयितुं तस्मिन् जाले प्राविशत् । लोमशिका पुन: अकथयत्-सम्प्रति पुन: पुन: कूर्दनं कृत्वा दर्शय । स: तथैव समाचरत् । अनारतं कूर्दनेन स: श्रान्त: अभवत्। जाले बद्ध: स: व्याघ्र: क्लान्त: सन् नि:सहायो भूत्वा तत्र अपतत् प्राणभिक्षामिव च अयाचत । लोमशिका व्याघ्रम् अवदत् 'सत्यं त्वया भणितम्' धर्मे धमनं पापे पुण्यं तु भवति एव ।' जाले पुन: तं बद्धं दृष्ट्वा स: व्याध: प्रसन्नो भूत्वा गृहं प्रत्यावर्तत ।

गौरवी गोरे
कक्षा - नवमी ब

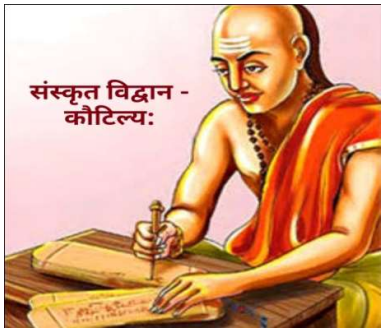

संस्कृत विद्वान - कौटिल्य:

अर्थशास्त्रग्रन्थस्य रचयिता कौटल्यः ।

केचन अस्य नाम "कौटिल्य" इति वदन्ति ।

तन्न साधु ।

यतः अस्य नाम कुटिलार्थकं न भवितुमर्हति । कामन्दकनीतिसारस्य "जयमङ्गलायां व्याख्यायाम् उक्तम् यत् - कौटल्य इति गोत्रनिबन्धना विष्णुगुप्तस्य संज्ञा इति ।

एतेन कुटलगोत्रापत्यं पुमान् "कौटल्यः" इति निरुच्यते ।

तथा च केशवस्वामिनः नानार्थार्णवसंक्षेपग्रन्थे "अथ स्यात् कुटलो गोत्रकृत्त्रषौ पुंसि नप् पुनः ।

विद्यादाभरणेऽथत्रिः कुटिलं कुञ्चिते भवेत् ॥

" इत्युक्तम् । तस्मात् कौटल्यः इत्ये समीचीनम् नाम ।

अयं मगधेषु जातः ।

क्रिस्तात् पूर्वं द्वितीये तृतीये वा शतमाने कौटल्यः अर्थशास्त्रं चकारेति चरित्रकाराः वदन्ति।

चणकनाम्नः ब्राह्मणस्य पुत्रः तस्मात् चाणक्यः इति अस्य नामान्तरम् ।

चाणक्यस्य प्रथमं नाम विष्णुगुप्त आसीदिति इतिहासात् ज्ञायते ।

यो हि पुरा मगधेषु नन्दान् निर्मूल्य चन्द्रगुप्तमौर्यं राजानं चकारेति श्रूयते ।

आचार्यविष्णुगुप्तस्य चरित्रम् विष्णुपुराणेऽपि लभ्यते ।
विशाखदत्तस्य मुद्राराक्षसनाटकेऽपि विशदतया वर्णितम् ।
क्षेमेन्द्रः 'बृहत्कथामञ्जर्यां' सोमदेवः 'कथासरित्सागर' विष्णुशर्मा
'पञ्चतन्त्रे' दण्डी दशकुमारचरितच कौटल्यस्य इतिवृत्तं प्रस्तुवन्ति ।
अपि च ग्रीक देशस्य सम्राजः 'सेल्यूकस्' नाम्नः रायभारी
"मेगास्तनीसः" लिखितरूपेण कौटल्यम् विवृणोति ।
एतान् सर्वानुल्लेखान् अवलोक्य सिद्ध्यति यत् -" महाचतुरः,
धीमान्, मौर्यसाम्राज्यस्थापनाचार्यः, कौटल्यः स्वयमेव ग्रन्थमेनम्
अलिखदित्येतस्य महत्ता स्फुटा भवति।

गौरवी गोरे
कक्षा - नवमी 'ब'

वृक्षः

श्रूयताम् सर्वे वृक्षपुराणम्,
क्रियताम् तथा वृक्षारोपणम्।
वृक्षस्यास्ति सुन्दरम् याति मूलं बहुदूरम्।।

मूलेपी अन्नम्, तस्य काष्ठं कठिनम्,
काष्ठं कठिनं भवति इन्धनार्थम्।
पर्णेषु भवति हरितद्रव्यम्,
अतो हि अस्ति रे पर्ण हरितम्।।

मास्तु रे मास्तु ईदृशं पापं,
यथाशक्ति क्रियताम् वृक्षारोपणम्।
नैव रे नैवास्तु वृक्षकर्तनम्',
सर्वे हि कुर्वन्तु तद्संवर्धनम्।।

अश्विनी फुंडे
कक्षा :- नवमी 'ड'

नीति सूक्ति

विद्वत्त्वञ्च नृपत्वञ्च नैव तुल्यं कदाचन।
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते॥1॥

पण्डिते च गुणाः गुणाः सर्वे मूर्खे दोषा हि केवलम्।
तस्मान्मूर्खसहस्त्रेभ्यः प्राज्ञ एको विशिष्यते॥2॥

परोक्षे कार्यहन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम्।
वर्जयेत्तादृशं मित्रं विषकुम्भ पयोमुखम्॥3॥

रूपयौवनसम्पन्ना विशाल कुलसम्भवाः।
विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः॥4॥

ताराणां भूषणं चन्द्रो नारीणां भूषणं पतिः।
पृथिव्या भूषणं राजा विद्या सर्वस्य भूषणम्॥5॥

स्वानंदी महाजन
कक्षा : ९ ड

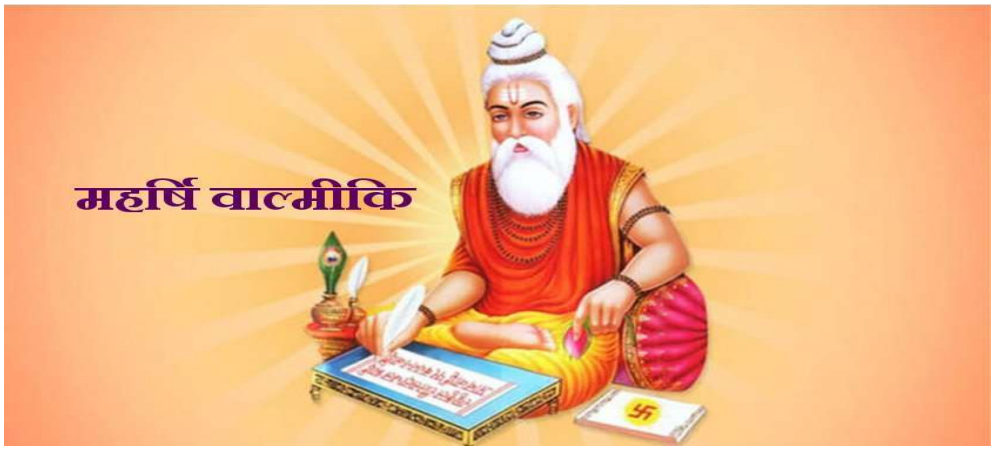

महर्षि वाल्मीकि संस्कृतसाहित्यस्य आदिकविरस्ति | अयं मर्यादापुरुषोत्तमस्य रामस्य चरितवर्णनाय 'रामायणम्' नाम आर्षकाव्यम् अरचयत्। रामायणस्य फलश्रुत्यध्याये रामायणस्य कर्तृत्वेन वाल्मीकेः उल्लेख: प्राप्यते । क्रौञ्चद्वन्द्वस्य एक व्याधेन व्यापादितं दृष्ट्वा अस्य कवेः मनसि समुत्थित: शोक: एव श्लोकरूपेण आविर्भूतः । उक्तञ्च -

क्रौञ्चद्वन्द्ववियोगोत्थ: शोक: श्लोकत्वमागतः ।

आदिकविरयम् ऋषेः प्रचेतस: दशम: पुत्र आसीत्। अयं जात्या ब्राह्मणः राज्ञो दशरथस्य च मित्रमासीत्। मुनेर्वाल्मीकेः आश्रमे दशसहस्रसंख्याकाः छात्रा: उषित्वा शिक्षामगृह्णन् । अस्याश्रमः गङ्गाया: तमसानद्याश्च तीरे आसीत्। वाल्मीकेः आश्रमविषये इदमपि मतं प्राप्यते यत् अस्याश्रम: यमुनायास्तटे चित्रकूटस्य समीपे आसीत्। तत्रैव उषित्वा वाल्मीकि रामायणस्य रचनामकरोत्।

वाल्मीकिना विरचितं रामायणम् लोकेऽस्मिन् सर्वतो मधुरम्, लोकप्रियम्, सर्वतश्चाधिकं हृदयस्पर्शि ऐतिहासिक काव्यमस्ति ।

अस्मिन् रामस्य कथां वर्णयित्वा कविना लोकसमक्षम् एक आदर्श: प्रस्तुतीकृत: यत् 'रामादिवद् वर्तितव्यं न रावणादिवत्' रावण : सीताया: अपहरणम् अकरोत् अतः तस्य समूलं नाशोऽभवत्। राम: रामायणस्य सर्वगुणसम्पन्न: आदर्शनायकोऽस्ति । रामस्य चरितानि पठित्वा जनाः स्वकर्तव्यस्य, लोकव्यवहारस्य शौर्यस्य च शिक्षा गृह्णन्ति । इयं रामायणी कथा इयती रुचिपूर्णा अस्ति यत् जावासुमात्रा बोर्नियो बालीचम्पाथाईलैंड प्रभृतिदेशेषु सर्वत्र प्रचारमलभत्।

परवर्तिभिरनेकै: महाकविभिः अस्य कथामवलम्ब्य अनेकानि काव्यानि नाटकानि विरचितानि अत एव इदं महाकाव्यं चिरस्थायिनीं कीर्तिमलभत। अत एवोच्यते -

यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।
तावद् रामायणीकथा लोकेषु प्रचलिष्यति ।।

गौरवी गोर
कक्षा - दशमी 'ब'

वीर

सच है, विपत्ति जब आती है,
कायर को ही दहलाती है,
सूरमा नही विचलित होते,
क्षण एक नहीं धीरज खोते,
विघ्नों को गले लगाते हैं,
काँटों में राह बनाते हैं
मुँह से न कभी उफ़ कहते हैं,
संकट का चरण न गहते हैं,
जो आ पड़ता सब सहते हैं,
उद्योग-निरत नित रहते हैं,
शूलों का मूल नसाते हैं,
बढ़ खुद विपत्ति पर छाते हैं।
है कौन विघ्न ऐसा जग में,
टिक सके आदमी के मग में?
खम ठोक ठेलता है जब नर,
पर्वत के जाते पाँव उखड़,
मानव जब ज़ोर लगाता है,
पत्थर पानी बन जाता है।
गुण बड़े एक से एक प्रखर,
है छिपे मानवों के भीतर,

मेंहदी में जैसे लाली हो,
वर्तिका-बीच उजियाली हो,
बत्ती जो नही जलाता है,
रोशनी नहीं वह पाता है।

- रामधारी सिंह दिनकर

अथर्व जाधव
कक्षा 10 वीं ब

शिक्षकः

इदं जीवनं मातापितृणां दानं कर्णवत् अस्ति तथा च यः एतत् कर्णं हीरकं करोति सः अस्माकं गुरुः अस्ति ।

ये इच्छन्ति यत् वयं सूर्यवत् प्रकाशं दाहं च कुर्मः येन वयं प्रकाशं प्राप्नुमः ।

सर्वे पृच्छन्ति भवतः सफलतायै कस्या हस्तः अस्ति तथा च सर्वे वदन्ति यत् अस्मिन् विषये अस्माकं मातापित्रौ हस्ता अस्ति ,

परन्तु अस्माकं शिक्षाकार: अस्मिन एङ्गः इति कोऽपि न वदति ।

सर्वे वदन्ति यत् त्वं संग्राहक: भव, वैद्यः भव , अभियंता भव , ना कोऽपि वदति यत् त्वं शिक्षक: भवितव्यः , ते जनाः तेषाः आचार्याणं विषये किं जानन्ति ?

अस्माकम् इव पिशाचं सम्पादयन्तः आर्चाया: नमः ,
ये अस्मासु अधिकारं दापयन्ति ने मातापित्रौ इव ,
को जानाति किं कर्नु शक्नुमः यदा सर्वं जगत् अस्मान् त्यजति ॥॥
मम सर्वेभ्यः आदरणीयगुरुभ्य: शिक्षक: दिवसे हृदयस्पर्शी शुभकामनाय ॥

वैष्णवी घोड़े

कक्षा : दसवी 'ब

संस्कृत श्लोक

1. यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा, शास्त्र तस्य करोति किम्।
लोचनाभ्यां विहीनस्य, दर्पणः किं करिष्यति॥
2. त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥
3. उद्यमेन हि सिध्यन्ति, कार्याणि न मनोरथैः।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य, प्रविशन्ति मुखे मृगाः॥
4. नरस्याभरणं रूपं, रूपस्याभरणं गुणः।
गुणस्याभरणं ज्ञानं, ज्ञानस्याभरणं क्षमा॥
5. नमस्ते शारदे देवि, कश्मीरपुरवासिनि।
त्वामहं प्रार्थये नित्यं, विद्यां बुद्धिं च देहि मे॥
6. सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे संतु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्॥
7. काव्यशास्त्रविनोदेन, कालो गच्छति धीमताम्।
व्यसनेन तु मूर्खाणां, निद्रया कलेहन वा॥
8. सत्येन धार्यते पृथ्वी सत्येन तपते रविः।
सत्येन वाति वायुश्च सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्॥

पायल शंभरकर
कक्षा : 10 ब

संस्कृत श्लोकाः

1. उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
   न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशंति मुखे मृगाः।
2. क्षणशः कणशश्चैव विद्यामर्थं च साधयेत् ।
   क्षणे नष्टे कुतो विद्या कणे नष्टे कुतो धनम् ॥
3. रामो विग्रहवान् धर्मस्साधुस्सत्यपराक्रमः।
   राजा सर्वस्य लोकस्य देवानां मघवानिव।।
4. येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।
   तेन त्वाम् अभिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल ॥
5. पुस्तकस्था तु या विद्या, परहस्तगतं च धनम् !
   कार्यकाले समुत्तपन्ने न सा विद्या न तद् धनम् ॥
6. काव्य-शास्त्र-विनोदेन कालो गच्छति धीमताम्।
   व्यसनेन तु मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा॥
7. यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत
   अभ्युत्थानमधर्मस्य तदाऽऽत्मानं सृजाम्यहम्।।
8. परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
   धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे।।

आदित्य अरुण कांबले
कक्षा :- नवमी ड

अंग्रेजी
विभाग

Thoughts

Criticism is that stone that people will throw at you all the time, but it is you who needs to decide to whether wild the caste of your greatness or the graveyard of your success.

Riddles

1) I have a face and two hands but no arms and legs who am I ?

Ans: A clock

2) Which word begins and ends with 'E' but has only one letter?

Ans: An Envelope

3) People buy me to eat, but never eat me who am I?

Ans: Plates

4) I am full of rugs but I can't open any door, what am I?

Ans: Piano

5) Where will you find Friday before Tuesday?

Ans: A dictionary

6) What can you catch but cannot throw?

Ans: A cold

Fun With Maths

1) Why did the circle, square and triangle join the gym?

Ans To keep in shape

2) Why does the cube wear so much makeup ?

Ans: Because it has 6 faces.

3) What happened to the tree that was good at math?

Ans: It got square roots

4) Why is addition so heavy?

Ans: Because you have to carry all numbers.

5) Why did the 90 degree angle win the argument?

Ans: Because the was right

6) Why did the decimal win the debate?

Ans : Because the made a good point.

Come –Live With Me

Pain is that What I feel when you are away?
The prick, the ache and the thorn in my heart?

Come- Soothe Me

Loneliness is that what surrounds me?
The gloom and the darkness

Come –Fill Me

Scared is that what I feel without you?
Dark shadows, hidden enemies, and clouded sky

Come- Comfort me

Don't leave me like this, no never
The Thought of it makes me quiver.
Do hear my plea, my sweet heart

Come – Live with me

Pleaswre ! Is what I feel with you by me
Light headedness my singing heart
and the starry nights.

Come – Fly with me

Satisfied! Is what I feel in your arm's secure
safe from the hidden shadows

Come – Hold me

Confident ! I am with you near me
and cross the seven oceans I shall but
sweet heart to he hear.

Come – Live With Me

Compilation
Vinod Narwade

Joke

This is a crime story 5 friends lived in a room.

Somebody

Nobody

Brain

Fool

Mad

One day somebody killed Nobody

Mad : Call police

Mad : Is it police station

Police : yes, What is the matter ?

Mad : R U mad?

Mad : Yes, I am mad.

Police : you don't have brain?

Mad : Brain is in bathroom

Police : Are you fool?

Mad : No, Fool is reading this!!

1) Teacher :What is the full form of maths

Student : Mentally affected teacher harassing students.

2) Teacher : Why are you late?

Student : Beause of road sign

Teacher : What type of sign?

Student : The sign that say school ahead go slow.

3) Teacher : What is your name ?

Student : My name is Beautiful red underwear

Teacher : What kind of a name is this? Don't joke tell me the right name

Student :My name is sundarlal chadda.

विविध गतिविधियों की झलकियाँ

International
Women's
Day
8th March

राष्ट्रीय युवा दिवस
महान विचारक एवं
युग प्रवर्तक
स्वामी
विवेकानंद
की जयंती पर
उन्हें कोटि-कोटि नमन।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन
WELCOME TO VIRTUAL LIBRARY
KENDRIYA VIDYALAYA AURANGABAD CANTT.
[SHIFT I]
KENDRIYA VIDYALAYA
AURANGABAD CANTT.
[SHIFT I]
WORLD BOOKS AND COPYRIGHT
DAY 2021
'SHARE A STORY'
E-INAUGURATION OF LIBRARY
BOOK EXHIBITION THROUGH
VIRTUAL LIBRARY
The Hike
Mongoose
The Garden

AGE GROUP 15-18 Years

KENDRIYA VIDYALAYA AURANGABAD CANTT.
AGE GROUP 15-18 Years

AGE GROUP 15-18 Years
STUDENT VACCINATION CAMPAIGN

Happy
Independence Day

केन्द्रीय विद्यालय औरंगाबाद, छावनी

अनुवाद और तकनीकी साधन
प्रस्तुतकर्ता
श्रीमान संजय शिंदे
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक – हिन्दी
केंद्रीय विद्यालय, दवितीय पाली
औरंगाबाद
Sanjay is presenting
Sanjay
You
Vikas
Bhawana
11 others

REDMI NOTE 8
AI QUAD CAMERA

26 NOVEMBER 2021
LIFE SHOULD BE GREAT RATHER THAN LONG
PREAMBLE

केंद्रीय विद्यालय औरंगाबाद छावनी
KENDRIYA VIDYALAYA AURANGABAD CANTT
Azadi Ka Amrit Mahotsav
अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह
International day of Yoga
21st June
मानवता के लिए योग
Yoga For Huma
योग सप्ताह
15 से 21 जून